Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal
(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)
(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)
* Vol-3* *Issue-1* *January 2026*
www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

स्वच्छता, पर्यावरण और सतत विकास में परस्पर संबंध

डॉ. अमरेश कुमार अमर

एम०ए० (गोल्डमेडलिस्ट), अतिथि सहायक प्राध्यापक, अर्थषास्त्र विभाग, एस०एन०एस०आर०के०एस० कॉलेज, सहरसा, बी०एन०एम०यू०, मधेपुरा

Article Info: *(Recieved- 16/11/2025, Accept- 16/12/2025, Published- 10/01/2026)*
DOI- 10.70650/rvimj.2026v3i10014

शोध–सारांश

स्वच्छता के सभी प्रावधान सुविधा, जो मानव के मल–मूत्र एवं कचरा अपशिष्ट पदार्थ आदि का निष्कासन करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं, यही प्रक्रिया स्वच्छता कहलाती है। सभी प्रकार की गंदगी को दूर कर निरोग व तंदुरुस्त जीवन जीना ही स्वच्छता का मूलमंत्र है। स्वच्छता से ही किसी स्वच्छ राष्ट्र का निर्माण होता है। स्वच्छता को वैश्विक स्तर पर भी आज एक महत्वपूर्ण मानक के रूप स्वीकार किया गया है।

वास्तव में स्वच्छ वातावरण ही स्वच्छ पर्यावरण को जन्म देता है जो सतत विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। परंतु आज भारत में बढ़ती जनसंख्या, निर्धनता, गरीबी, अशिक्षा और बढ़ती शहरीकरण के कारण प्रदूषण की समस्या बहुत गम्भीर बन गई है। प्रदूषण के इन सभी समस्याओं में अस्वच्छता सबसे बड़ी समस्या है। इसका कारण, कचरा अपशिष्ट पदार्थ आदि जिसका अव्यवस्थित और असंयमित तौर–तरीके से उपयोग करना ही स्वच्छ वातावरण के लिए सबसे बड़ी बाधा है। जो यह मानवीय संसाधन को ह्रासमान की स्थिति पर पहुंचा देता है इससे सतत विकास की बात तो दूर इससे समस्त आर्थिक क्रियाकलाप ही अवरूद्ध हो जाता है। ऐसा नहीं है कि कचरा अपशिष्ट की समस्या केवल विकासशील देशों में है बल्कि विकसित देशों में भी गंभीर समस्या है। लेकिन वहां संसाधन तथा स्वच्छता के प्रति वहाँ के नागरितक जागरूक है और वे अपने देश व पर्यावरण को साफ रखने में सक्षम है।

इस संदर्भ में भारत सरकार ने पूर्व में ही ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम जो प्रथम पंचवर्षीय योजना के रूप में 1954 में शुरू किया गया। 1981–90 के दौरान पेयजल एवं स्वच्छता के लिए अंतरराष्ट्रीय दशक में ग्रामीण स्वच्छता पर जोर देना शुरू किया गया। 1986 में केंद्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम और 1989 से संपूर्ण स्वच्छता के अंतर्गत जागरूकता तथा स्वच्छता सुविधा पर अधिक जोर दिया। निर्मल ग्राम पुरस्कार 2005 में प्रदान किए गए जिसमें पूर्ण स्वच्छता और खुले में शौच मुक्त ग्राम पंचायत की स्थिति को प्राप्त करना रहा । सर्वव्यापी स्वच्छता कवरेज हासिल करने के प्रयासों में वृद्धि करने तथा स्वच्छता पर केंद्रित करने हेतु भारत सरकार के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया गया जिसका लक्ष्य 2 अक्टूबर 2019 तक स्वच्छता की पूर्ण स्थिति प्राप्त करना था। परंतु आज भी इस प्रक्रिया और सरकार द्वारा उठाए गए इतने साहस पूर्ण कमदों के बाबजूद यह असफल है। इसके असफलता के अनेक कारण है। इसके लिए खास कर मनुष्य के व्यवहारों में बदलाव अनिवार्य है और इस हेतु जन जागृति पैदा करने के साथ साथ सरकार को भी सकारात्मक एवं कानूनन प्रयास करने की आवश्यकता है।

अतः स्वच्छता, पर्यावरण और सतत विकास में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में परस्पर अन्तर्संबंध है। इसलिए समग्र विकास हेतु स्वच्छता, पर्यावरण और सतत विकास में त्रिभुजीय संबंध स्थापित करना आवश्यक है। इसी आवश्यकता एवं उदेश्य से अभिप्रेरित होकर प्रस्तुत शोध– पत्र लेखन तैयार किया गया है।

कुंजी– स्वच्छता, पर्यावरण, सतत् विकास, ग्रामीण स्वच्छता, स्वरोजगार

भूमिका

स्वच्छता से ही किसी स्वच्छ राष्ट्र का निर्माण होता है यों कहें तो किसी भी देश के विकास को मापने का सबसे अच्छा मापदंड वहां रह रहे लोगों का सुंदर स्वास्थ्य तथा कार्य– क्षमता है। अच्छा स्वास्थ्य ही कार्य कौशल प्रदान करता है जो उनकी कार्यक्षमता में वृद्धि कर वहां के राष्ट्रीय आय में वृद्धि करता है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति किसी एक आधार यथा भूमि पर खड़ी नहीं होती बल्कि उसके विभिन्न आयामों, पर निर्भर करती है उसमें स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत विकासशील देश के पथ पर चलकर विकसित राष्ट्र की श्रेणी में खड़ा हो सके इसके लिए देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य होना चाहिए कि वह सरकार द्वारा उठाए गए कदम को कदम से मिलाकर सहयोग करें। इस कर्तव्य की पूर्ति तभी संभव है जब हमें देश और राज्य में सरकार द्वारा चलाए जा रहे समाज कल्याण हेतु कोई भी योजना जो मानव जीवन कल्याण जैसे आर्थिक सुधाधिकरण स्वास्थ्य, सुविधा, आर्थिक एवं विकासात्मक हितों एवं प्राकृतिक संपदा के संरक्षण को केंद्र में रखकर नीति बनाई गई हो। इस प्रक्रिया में लगे पदाधिकारी कर्मचारी और आम लोगों को इस नीति का सही–सही पालन किया जाना सुनिश्चित करना होगा। इस तरह अस्वछता सिर्फ शारीरिक क्षति ही नहीं पहुंचती है बल्कि यह हमारे द्वारा फैलाई गई कचरा अपशिष्ट देश के आर्थिक नुकसान का कारण भी बनती है। वहीं अगर इस पहलू पर ध्यान रखा जाए तो ऐसे में न केवल देश आर्थिक रूप से सुदृढ होगा बल्कि यह एक मजबूत आधारशिला का भी निर्माण भी करेगा जो पर्यावरण संरक्षण के साथ सतत विकास का मार्ग प्रशस्त करेगा ।

वास्तव में स्वच्छ वातावरण भी स्वच्छ पर्यावरण को जन्म देता है तथा सतत आर्थिक विकास के मार्ग प्रशस्त को करता है। लेकिन आज भारत में बढ़ती जनसंख्या, निर्धनता, गरीबी और बढ़ती शहरीकरण के कारण प्रदूषण की समस्या गंभीर होती जा रही है। प्रदूषण की इन अनेक समस्याओं में अस्वच्छता भी एक महत्वपूर्ण समस्या है। इसमें कचरा अपशिष्ट पदार्थ, मल–मूत्र आदि जिसका अव्यवस्थित और असंयमित तौर–तरीके से उपयोग करना ही स्वच्छ वातावरण के लिए सबसे बड़ी बाधा है। इसलिए मानव जीवन के लिए स्वच्छ वातावरण होना आवश्यक है। भारतीय दर्शन में भी शरीर, आत्मा, मन तथा पर्यावरण को शुद्ध और स्वच्छ रखना मानव जीवन के लिए महत्वपूर्ण बताया गया है। लेकिन आज तेजी से बढ़ते शहरीकरण व औद्योगीकरण के चलते और व्यक्तिगत स्वार्थ की भावना से जो समाज कल्याण संबंधित क्रियाकलाप को नजर–अंदाज कर आज लोग खुद को चकाचौंध करने के चक्कर में मानो जैसे आंखों में काले चश्मे पहन रखे हैं। इस तरह पर्यावरण का ह्रास होना जो मानवीय संसाधन को ह्रासमान स्थिति पर पहुंचा देता है। जिसके चलते सतत आर्थिक विकास की बात तो छोड़िए इससे समग्र आर्थिक क्रियाकलाप ही अवरूद्ध हो जाता है। जबकि सरकार द्वारा ऐसी वस्तुओं का उपयोग करने के लिए कानूनी रूप से प्रतिबंध लगा दिया गया है फिर भी यह हमारे आसपास ऐसे दिख रहा है जैसे मानो आंखों के सामने मोती की तरह बिखरे पड़े हैं जो कि पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुंचा रहा है। इसलिए समाज के हर तबके के लोगों को पूर्णतः पर्यावरण संरक्षण हेतु स्वच्छ वातावरण रखना और सभी नागरिकों के लिए अच्छा जन–स्वास्थ्य तथा पर्यावरण परिणाम सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। इस दिशा में स्वच्छता संबंधित कई समाज सुधारक जैसे महात्मा गांधी जी ने यहां तक कह दिए थे कि स्वतंत्रता से अधिक स्वच्छता का महत्व है। गांधी जी का सपना जो आज भी अधूरा है। इस दिशा में भारत सरकार ने ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम प्रथम पंचवर्षीय योजना के तहत 1954 में ही शुरू किया गया था। 1981–90 के दौरान पेयजल एवं स्वच्छता के लिए ग्रामीण स्वच्छता पर जोर देना शुरू किया गया। वही 1986 में केंद्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम शुरू किया गया। 1989 से संपूर्ण स्वच्छता के अंतर्गत जागरूकता तथा स्वच्छता पर अधिक जोर दिया गया। जागरूकता सृजित करने के लिए निर्मल ग्राम पुरस्कार 2005 में शुरु किए गए थे। स्वच्छता खुले में शौच मुक्त ग्राम पंचायत की स्थिति को प्राप्त करना मुख्य उद्देश्य था। निर्मल भारत अभियान 2012 में शुरू किया गया इसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता की गति को तेज करना था। इसी तरह स्वच्छता कवरेज हासिल करने के प्रयासों में वृद्धि करने तथा स्वच्छता पर केंद्रित करने हेतु भारत सरकार के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की गई जिसका लक्ष्य 2 अक्टूबर 2019 तक पूर्णतरू स्वच्छ भारत की स्थिति प्राप्त करना था। परंतु आज भी इसके प्रति सरकार द्वारा उठाए गए अनेक कदम जिन पर सकारात्मक पहल पूर्णतः संभव नहीं हो पाया है।

इस परिप्रेक्ष्य में मेरे द्वारा पूर्व में किए गए शोध अध्ययन विषय 'स्वच्छ भारत अभियान एक अर्थशास्त्रीय अध्ययन' कोसी एवं पूर्णियॉ प्रमंडल के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण मार्ग दर्शन प्रदान करता है ।

शोध साहित्य समीक्षा

वस्तुतः जब कोई शोध कार्य करने के लिए अग्रसर होता है तो उनके सामने बहुत सारे प्रश्न उपस्थित होते हैं जिसका उत्तर प्राप्त करने में शोध समस्या से संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण आवश्यक हो जाता है। संबंधित

साहित्य से मतलब उस पुस्तक, पत्र पत्रिकाएं, प्रकाशित एवं प्रकाशित शोध ग्रंथ एवं अभिलेखो से है जिनको अध्ययन कर वह अपनी समस्या से संबंधित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करता है। उससे समस्या चयन, परिकल्पना के निर्माण एवं रूपरेखा के निर्धारण आदि में भी सहायता प्राप्त होती है इससे शोध की उपादेयता का निर्धारण, शोध–विविध तंत्र निष्कर्षात्मक मूल्यांकन आदि प्राप्त करने में सहायकता मिलती है।

शोध का उद्देश्य

मानव द्वारा जब कोई कार्य किया जाता है तो वह अवश्य ही किसी न किसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया जाता है चाहे वह उद्देश्य का रूप प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष उस कार्य को करने में व्यक्ति का कोई निजी स्वार्थ, समूह जैसा कोई ना कोई उद्देश्य अवश्य निहित होता है जो उनके संपन्न होने में प्रेरक की भूमिका निभाता है। वहीं सामाजिक शोध की प्रकृति से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक शोध नए ज्ञान की प्राप्ति व पुराने ज्ञान के परिमार्जन संबंधित उद्देश्यों से प्रेरित होकर किए जाते हैं। प्रत्येक मानवीय प्रयास के मूल में कोई ना कोई प्रयोजन अथवा उसका उद्देश्य अवश्य निहित होता है। सामाजिक शोध भी एक ऐसा ही प्रयास है जिसका उद्देश्य सामाजिक घटनाओं पर आधारित तथ्यों का संकलन, विश्लेषण नियमों का प्रतिपादन करना है। सामाजिक शोध का उद्देश्य स्पष्ट तथ्यों का निर्धारण सामाजिक जीवन की भ्रांतियाँ, सामाजिक, मनौवैज्ञानिक, राजनीतिक, अध्यात्मिक, वैज्ञानिक इत्यादि घटनाओं से संबंधित तथ्यों को प्राप्त करना तथा उसे संशोधित और नवीनीकरण करना होता है। अतरू शोध का उद्देश्य सैद्धांतिक हो या व्यवहारिक प्रत्येक शोध कार्य मानव कल्याण में वृद्धि करता है।

शोध की उपयोगिता

व्यापाक रूप में शोध किसी भी क्षेत्र में ज्ञान की खोज या विधिवत्त गवेषण करना होता हैं। शोध के अंतर्गत शोध पूर्वक पर्यत्नों से तथ्यों का संकलन कर सूक्ष्म ग्राही एवं विवेचन बुद्धि से उसका अवलोकन विश्लेषण करके नए तथ्यों या सिद्धांतों का उद्घाटन किया जाता है। परिवर्तन ने जहां एक और मानवीय मूल्यों एवं सामाजिक संरचना को नए रूप दिया है वहीं इसके कारण समाज में अनेक तरह–तरह के समस्याओं का भी पार्दुभाव हुआ है। हकीकत तो यह है कि हमारा सामाजिक जीवन जैसे–जैसे जटिल होता जा रहा है उसका वैज्ञानिक अध्ययन करना उतना ही आवश्यक हो गया है। सामाजिक शोध की उपयोगिता किसी तत्व से हीं हो जाती है कि शोध के द्वारा विभिन्न प्रकार की समस्याओं का निष्पक्ष रूप से अध्ययन करके प्रमाणित तथ्यों को प्राप्त किया जा सकता है। यही तथ्य सिद्धांतों का निर्माण कर भावी प्रवृत्तियों को स्पष्ट करने में सहायक होते हैं। आज जैसे सामाजिक नियोजन के प्रति हम सबकी जागरूकता बढ़ रही है सामाजिक शोध के द्वारा ही उपयोगी ज्ञान प्राप्त करके कल्याण में वृद्धि कर सकते हैं।

शोध अध्ययन प्रविधि

किसी भी शोध विषय के बारे में जानकारी की पहचान करने और उसका विश्लेषण करने के लिए उपयोग की जाने वाली तकनीक और प्रक्रियाओं का वर्णन करती है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा शोधकर्ता अपने अध्ययन को इस तरह से डिजाइन करते हैं कि वह चयनित शोध उपकरणों का उपयोग करके अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर सके। प्रस्तुत शोध पत्र विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक तथा वैज्ञानिक प्ररचना पर आधारित है। पत्र पत्रिकाओं समयिकी की एवं प्रकाशित पत्र जिसका बहुमूल्य स्रोतों में प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत विषय के विविध आयामों पर कई महत्वपूर्ण शोध जिसमें में कुछ प्रकाशित और अप्रकाशित आत्मकथा बहुमूल्य डाटा जुटाए गए हैं। अवलोकन कर इंटरनेट आदि के आधार पर प्राथमिक एवं द्वितीय तथ्यों पर विश्लेषण कर परिकल्पना आधारित निष्कर्ष एवं सुझाव दिए गए हैं।

परिकल्पना

किसी घटना की व्याख्या करने वाला कोई सुझाव या अलग–अलग प्रतीत होने वाली बहुत सी घटनाओं के आपसी संबंध की व्याख्या करने वाले कोई तर्कपूर्ण सुझाव परिकल्पना कहलाता है। परिकल्पना का शाब्दिक और चारों ओर चिंतन जहां परि का अर्थ चारों ओर एवं कल्पना का अर्थ चिंतन होता है, इसमें सुझाव का परीक्षण किया जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र विषय में स्वच्छता एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें आम लोगों के सहयोग के बिना सफल नहीं हो सकता है क्योंकि इसमें व्यवहारात्मक प्रक्रिया की अहम भूमिका होती है। उदाहरण–स्वरूप लोग आज भी केले खाते और छिलके राह पर ही फेंकते हैं पानी पीते और बोतले सड़क पर फेंकते हैं पता नहीं उनकी यह छोटी सी भूल अनदेखी गलती कितनी भयानक घटना घट सकती है और न जाने कितने लोगों की हड्डियां भी टूट सकती है। जो किसी के भी बड़ी मात्रा में आर्थिक क्षति पहुंच सकती है और आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ सकता है। आज भी समाज में खुले में शौच करना बहुत बड़ी शर्मिंदगी की बात है खास करके

महिलाओं द्वारा स्वच्छता संबंधित सेनेटरी पेड का इस्तेमाल न करना स्वास्थ्य संबंधित अनेक बीमारियां उत्पन्न करती है। परंतु कचरा अपशिष्ट पदार्थ से निजात पाने और पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ आर्थिक दृष्टिकोण से कचरा अपशिष्ट पदार्थ से एक मूल्यवान संसाधन के रूप में बदलने और उसका उपयोग करने की आवश्यकता है। इससे निजात पाना ही नहीं बल्कि वेस्ट टू बेस्ट यानी कचरा से संपन्नता की ओर कदम बढ़ा सकते हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव

इस प्रकार संपूर्ण शोध पत्र के विश्लेषण से मुख्य रूप से हम निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि स्वच्छता स्वास्थ्य में अन्योनाश्रय संबंध है स्वच्छता पर्यावरण पर आश्रित है और पर्यावरण भी स्वच्छता पर आश्रित है। स्वच्छता पर्यावरण और सतत विकास में अन्तर्संबंध है। शारीरिक व मानसिक रूप से पूर्णतरू स्वस्थ्य होना यानि समस्या विहीन होना ही स्वास्थ्य है। स्वच्छता ही अच्छे स्वास्थ्य की जननी है लोगों को अपने अच्छे स्वास्थ्य एक अमूल धन या संपत्ति है। इसलिए अच्छे स्वास्थ्य के लिए आसपास के वातावरण को साफ रखना जरूरी है। सुरक्षित स्वच्छता की कमी के कारण आज ज्यादा बीमारी दूषित वातावरण से हो रही है। इस तरह स्वच्छता केवल जीने के उद्देश्य को ही संदर्भित नहीं करता है बल्कि यह रोजमर्रा की जिंदगी के संसाधनों को भी संदर्भित करता है। यह एक मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली के उत्पादन में वृद्धि करती है।

स्वच्छता और पर्यावरण में गहरा संबंध

वास्तव में स्वच्छ वातावरण स्वच्छ पर्यावरण को जन्म देता है जो सतत आर्थिक विकास के मार्ग को प्रशस्त करता है अतः स्वच्छता एवं पर्यावरण में परस्पर अंतर्संबन्ध है। स्वच्छता से वातावरण स्वच्छ और सुंदर बना रहता है इससे पर्यावरण स्थिति भी स्वच्छ और स्वस्थ रहती है। पर्यावरण की समस्या किसी एक देश की नहीं है बल्कि यह वैश्विक समस्या है और इन अस्वच्छता के कारण पर्यावरण पर जोखिम पैदा हुआ है। शहरी एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में अस्वच्छता संबंधित प्रक्रिया में कम जागरूकता होने के कारण पर्यावरण भी प्रभावित हुए हैं। जलावरण, वातावरण, मृदावरन आदि पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। लोगों द्वारा गलत तरीके से संसाधनों का उपयोग करके उद्योग, यातायात, जंगलों की अंधाधुंध कटाई, प्लास्टिक का उपयोग करना अपशिष्ट का आधिकाधिक मात्रा में उपलब्ध होना आदि जिससे पर्यावरण और असंतुलित होते जा रहा है। इसका सीधा प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है जो संपूर्ण समाज को प्रभावित करता है, जिसका उपाय भी इसी समाज की विषय वस्तु है। वर्तमान में स्वच्छता के अभाव में अपने आप ही गंदी बस्तियां पैदा होने लगी गंदी निवास खासकर के शहरों की ज्यादा समस्या बनी हुई है जैसे मुंबई, कोलकाता, दिल्ली, बनारस,चेन्नई जैसे महानगरों में भौतिक विकास तो की है, परंतु भौतिक विकास के साथ ही गंदगी की समस्या भी तेजी से बढ़ने लगे हैं। शहरों में उद्योग का दूषित पानी और जहरीले वायु के द्वारा पर्यावरण को नुकसान हुआ है मलवा प्लास्टिक के टुकड़े कचरा अपशिष्ट पदार्थ की अव्यवस्था तथा गांव में खुले में शौच क्रिया, स्कूलों में शौचालय की असुविधाएं वहां के वातावरण को दूषित कर पर्यावरण को बहुत हानि पहुंचती है। अस्वच्छता ऐसा प्रदूषण है जिससे स्वास्थ्य खतरा के साथ–साथ पर्यावरण के लिए भी खतरा है। कचरा अपशिष्ट का उचित निपटान न होने के कारण गंदगी वहां के वातावरण को दूषित कर देता है इससे लोगों को अनेक बीमारियों का सामना करना पड़ता है। इसे संतुलित रखने हेतु पर्यावरण का स्वच्छ होना जरूरी है पर्यावरण मनुष्य एवं आर्थिक विकास में परस्पर संबंध है इस तरह मानव पर्यावरण का उपयोग करके अपनी आर्थिक स्थिति को भी सुधारता है और उसका जीवन बहुत ही सुख–सुविधाओं से भर जाता है।

पर्यावरण की सेवा तभी तक क्रियाशील रहती है जब तक मनुष्य की सभी गतिविधियां एक सीमा के अंदर रहती है इसके दुरुपयोग व उल्लंघन के बाद स्वयं पर्यावरण प्रदूषित होने लगता उसकी ह्रास होने लगती है तब पर्यावरण भी मनुष्य को अपने संसाधन उपलब्ध कराने में असमर्थ हो जाती है। स्पष्ट है कि स्वच्छता की उपस्थिति में ही पर्यावरण स्थिति भी स्वच्छ और स्वस्थ बनी रहती है। सच में स्वच्छ वातावरण से पर्यावरण अनुकूल और संतुलित बनी रहती है किसी भी प्रकार का पर्यावरण प्रदूषण स्वच्छता से ठीक हो जाता है।

स्वच्छता, पर्यावरण और सतत विकास में संबंध

सतत विकास हेतु स्वच्छता तथा स्वास्थ्य का होना आवश्यक हो जाता है। अस्वच्छता के कारण पर्यावरण दूषित हो जाता है जिससे अनेक बीमारियां उत्पन्न होती है यह मानवीय पूंजी को खराब कर उनकी कार्य क्षमता में कमी लाती है। पर्यावरण के बिगड़ते और असंतुलित होने से सबसे पहले तो स्वास्थ्य संबंधित समस्या उत्पन्न होती है इस समस्या से बचने के लिए पुनः लोग इस पर अतिरिक्त आर्थिक खर्च करने लगते हैं जिससे उनकी आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगता है।

इतना ही नहीं इसका जीता जागता उदाहरण कोविड–19 वैश्विक महामारी है जो चीन के वुहान शहर से

फैला वायरस जो पूरी दुनिया को तबाही मचा कर रख दिया जिससे समस्त जनजीवन अस्त–व्यस्त हो गया और समग्र सामाजिक आर्थिक व्यवस्था ही इतर भीतर हो गया। इस महामारी से बचने और बीमारी के विस्तार को कम करने या रोकने के लिए सरकार द्वारा लॉकडाउन प्रक्रिया अपनाया गया यानि लोगों को घरों में कैद होने को मजबूर कर दिया गया। ऐसे हालात से निपटने दुनियाँ के अनेक डॉक्टर माथे पर हाथ रखे बैठे रहे मानो जैसे उसका सुध–बुध खो हो गया है। इस समस्या से निपटने के लिए एक मात्र उपाय स्वच्छता प्रक्रिया को अपनाया गया जो पूरी दुनिया में फिर से एक बार पुनः स्वच्छता पर ध्यान आकर्षित करने लगा जिसको लोग सदियों से भुल गए थे। इस व्यवस्था के कारण पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा जो चीज नजदीकें से नहीं दिखाई देता था वह ऐसे में अब कोशों दूर से दिखाई देने लगे हैं। लोगों द्वारा परहेज और समझदारी तथा स्वच्छता प्रक्रिया के प्रति उनके द्वारा किए गए मजबूरी में तमाम क्रियाकलाप जिससे सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला। दिल्ली में यमुना नदी तो इतना साफ हो गया कि वहां पूछिए मत इसके पीछे सरकार हजारों करोड़ खर्च करके भी जो काम आज तक नहीं कर सका वह भारत में महामारी कल के दौरान बरते एहतियात के चलते दिखने लगा। कोविड–19 महामारी का नकारात्मक प्रभाव पड़ने के साथ साथ न जाने कितने का रोजगार भी खत्म हुआ और अर्थव्यवस्था में बेपटरी हुआ। परंतु यह महामारी ने एक चीज तो जरूर सिखा दिया वह स्वच्छता प्रक्रिया शुद्ध स्वच्छ वातावरण आदि चारों तरफ से स्वच्छता ही स्वच्छता। यौ कहे तो प्रकृति का बदलाव, प्रकृ ति का नियम है, याद है कि जब कोई भी महामारी आई है तो वह विनाश के साथ–साथ उम्मीदें की लंबी लकीरें खिंच जाती है। ऐसे में यह लोगों की सोच में बदलाव लाया कि स्वच्छता के प्रति लोगों में जागरूकता भी बढ़ी।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि स्वच्छता मानव समुदाय के लिए कितना आवश्यक है परंतु लोग इस बात को भूल जाते हैं जिससे पुनः वही स्थिति हो जाती है जो स्थित पूर्व में था लेकिन दीर्घकालीन सुखद हेतु निश्चित रूप से इस प्रक्रिया को अपनाने की आवश्यकता है। इस तरह संपूर्ण शोध पत्र के उपायुक्त तमाम तथ्यों के विश्लेषणात्मक अध्ययन के बाद निष्कर्ष तौर पर हम कर सकते हैं कि स्वच्छता पर्यावरण और सतत विकास में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में एक दूसरे को प्रभावित करता है।

अतः स्वच्छता, पर्यावरण और सतत विकास में अन्तर्संबंध है। कहते हैं ना घर की मजबूती के लिए घर में मुख्य रूप से चार खंबे का मजबूती होना आवश्यक है। परंतु यहां समग्र मानव विकास हेतु इन चार स्तंभों स्वच्छता स्वास्थ्य पर्यावरण तथा आर्थिक विकास इन चार स्तंभों में जो पूंजी निवेश की जाती हैं। यों कहें तो बस सतत विकास हेतु उन सभी स्तंभों के विनिवेश पूंजी इन्हीं एक स्वच्छता वाली स्तंभो पर निवेश किया जाए ताकि राजस्व की बचत और कम निवेश पर देश सतत विकास की ओर अग्रसर हो सकें।

सुझाव

यह तीनों चरों स्वच्छता, पर्यावरण और सतत विकास एक दूसरे पर आधारित है। इसमें किसी एक दूसरे पर नजर अंदाज करना सामाजिक एवं आर्थिक विकास को खतरा आमंत्रित करना है। इस प्रकार स्वच्छता प्रक्रिया को मजबूती प्रदान करने हेतु सभी सुझाव पर दृष्टिपात करना आवश्यक हो जाता है। शोध–पत्र के निर्ष्कषात्मक मूल्यांकन के उपरांत कुछ स्वविवेक सुझाव प्रस्तुत किए जा रहे हैं जो इस प्रकार है–

1. स्वच्छता संबंधित अध्ययन को सभी क्षेत्रों में अनिवार्य करना।
2. प्लास्टिक वस्तु का उपयोग करने पर सख्त पाबंदी।
3. कचरा अपशिष्ट पदार्थ का निपटान संग्रह व समुचित व्यवस्था करना।
4. शैक्षणिक संस्थानों में स्वच्छता संबंधित खास करके लड़कियां महिलाओं के लिए सैनिटरी पेड की उपलब्धता और उनके प्रति जागरूकता को बढ़ाना देना।
5. सैनिटरी पेड के वैज्ञानिक व लघु उद्योग के रूप में उत्पादन और विकसित करना।
6. नगर निगम, नगर पंचायत, ग्राम पंचायत में बंद पड़े नाली की मरम्मत करना।
7. प्रदूषण जांच केंद्र की पर्याप्त व्यवस्था करना!
8. इसमें लगे सभी कर्मियों एवं श्रमिकों के बीच सख्त निर्देश तथा जनप्रतिनिधियों को इसका दायित्व प्रदान करना।
9. ट्रेनों में साफ सफाई समुचित व्यवस्था करना और इसके प्रति ध्यानआकर्षित करना।
10. इसको जन आंदोलन के रूप में विकसित करना।
11. शुद्ध पेयजल की व्यवस्था को सत प्रतिशत बढ़ावा देना।

12. मानवीय दृष्टिकोण को बदलने हेतु सरकार द्वारा प्रोत्साहित करना।
13. इसमें लगे सामाजिक कार्यकर्ता तथा स्वयंसेवी, आम जनों को सरकार द्वारा प्रोत्साहन देने की व्यवस्था करना।
14. तुलनात्मक रूप में परंपरागत वस्तु का प्रयोग करने हेतु लोगों को जागरूक करने की आवश्यकता।
15. स्वच्छता प्रक्रिया को राष्ट्रवाद का पर्याय के रूप में जोड़ना।
16. इसमें जो सबसे बड़ी समस्या चोरी चुपके छुपके वाली समस्या है इनको पहचान कर इसके व्यवहार में बदलाव लाने हेतु उसे प्रोत्साहित करना।

अंत में हम कह सकते हैं कि संपूर्ण शोध–पत्र को मौलिक बनाने का संभव प्रयास किया गया है हम यों कहें तो शोध–पत्र मौलिकता के अत्यधिक निकट है और इसमें दिए गए सुझाव का यदि अनुपालन और अनुसरण किया जाए तो निश्चित रूप से इस समस्या से निजात पाने के साथ–साथ सफलता की प्रतिष्ठा को प्राप्त कर सतत विकास के मार्ग प्रशस्त करेगी।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ सूची

1. डॉ. डी.पी माहेश्वरी, पर्यावरणीय अर्थशास्त्र, कैलाश पुस्तक सदन भोपाल।
2. डॉ.आर.एस सिंह, पर्यावरणीय अर्थशास्त्र, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी पटना।
3. डॉ. सी. सी. सिन्हा एवं डॉ पुष्पा सिन्हा,विकास एवं पर्यावरणीय अर्थशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूटर।
4. डॉ. सी. सी. सिन्हा ,विकास एवं पर्यावरण अर्थशास्त्र, सहित भवन पटना।
5. एम.एल.झिंगर, विकास अर्थशास्त्र एवं आयोजन,वृंदा पब्लिकेशन मयूर विहार दिल्ली।
6. जी. एल. शर्मा,सामाजिक मुद्दे, रावत पब्लिकेशंस नई दिल्ली।
7. डॉ. रश्मि जायसवाल एवं डॉ. रूपम चोरडिया, पर्यावरण एवं सामाजिक क्षेत्र का अर्थशास्त्र।
8. Dalberg. "summary Report: Assessment of ODF Environment on faecal contamination of water-soil and food "
9. Ministry of drinking water and sanitation government of india 2017 "the sanitation health impact assessment study"
10. unicef 2019 "assessment Of IEC Activity swachh bharat mission ¼Gramin½2014 19"
11. water Aid and OÛford Economic 2016" The true cost of poor sanitation-
12. world bank 2011 new delhi water and sanitation program"Economic impact of inadequate sanitation in india.
13. www.sarkariguider.in
14. www.india-gov.in

Cite this Article

'डॉ. अमरेश कुमार अमर, "स्वच्छता, पर्यावरण और सतत विकास में परस्पर संबंध", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:3, Issue:1, January 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."